शास्त्र के अनुसार कलीसिया का काम

प्रेरितों के काम की पुस्तक दिखाती है कि प्रभु की कलीसिया को क्या करना है। इसमें प्रेरितों द्वारा उस ग्रेट कमीशन को आगे ले जाने के काम का इतिहास है जो प्रभु ने उन्हें पूरा करने के लिए दिया था। यीशु ने प्रेरितों को तब तक यरूशलेम में रुकने के लिए कहा था जब तक कि वे पवित्र आत्मा नहीं पा लेते और कहा कि इसे पा लेने से वे उस चुनौती को पूरा करने की सामर्थ पाएंगे (प्रेरितों 1:8)। उन्हें (1) वे सब बातें याद दिलाने के लिए जो यीशु ने उन्हें सिखाई थीं, (2) एक मसीही के रूप में यीशु की गवाही देने के लिए और (3) प्रेरितों के रूप में प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के लिए सच्चाई में जो भी अगुआई की आवश्यकता थी, वह देने के लिए पवित्र आत्मा की प्रेरणा दी जानी थी (यूहन्ना 14:26; 15:26, 27; 16:13)।

शिक्षाओं के साथ-साथ उन्हें नेतृत्व करने की भी प्रेरणा मिलनी थी। सुसमाचार का प्रचार और पश्चात्तापी विश्वासियों को मसीह में बपतिस्मा देने के बाद, उन्होंने अपनी शिक्षा को जारी रखना था (मत्ती 28:20)। प्रेरितों ने नये मसीहियों को यीशु की सभी आज्ञाओं को मानने में अगुआई करनी थी। इसलिए, आरम्भिक कलीसियाओं का कार्य करने में प्रेरितों की अगुआई के बारे में जानने से प्रकट होता है कि प्रभु प्रत्येक पीढ़ी में अपनी कलीसिया से क्या अपेक्षा करता है।

लूका ने सुधार, पवित्रीकरण और कलीसिया के बढ़ने का अद्‌भुत समय बताया है (प्रेरितों 9:31)। प्रेरितों के काम में केवल संसार के लगभग तीस वर्षों (लगभग 33 से 62 ईस्वी) का ही इतिहास है, परन्तु जहां तक प्रभु की कलीसिया का सम्बन्ध है शायद इन तीन दशकों में उसके अति महत्वपूर्ण वर्षों का वर्णन है। यह पुस्तक बताती है कि प्रभु की कलीसिया उसे कैसे प्रसन्न कर सकती है।

कलीसियाओं ने खोए हुओं को सिखाया

प्रेरितों ने प्रतिदिन मन्दिर में शिक्षा देने के आरम्भिक उदाहरण स्थापित कर दिए थे (प्रेरितों 2:42, 46)। इस रीति से हज़ारों लोग प्रभु में आ गए थे। थोड़ी देर बाद, इसके कारण उन्हें यीशु के नाम में और शिक्षा देने की मनाही भी हो गई थी; परन्तु प्रेरितों ने ऐसी

मांगों को मानने से इन्कार कर दिया था (प्रेरितों 4:17-19)। वे बड़ी दृढ़ता से शिक्षा देते रहे, और लूका ने एक अवसर पर यहूदी अगुओं की ओर से उन्हें पड़ी मार के बारे में भी लिखा था (प्रेरितों 5:17-21, 40)।[1] अपनी संगति की ओर लौटते हुए ये प्रेरित यरूशलेम की धूल भरी गलियों में लहू का पद चिह्न छोड़ गए थे।

यही प्रेरित जो पहले यीशु के लिए बात करने से हिचकिचाते थे, अब आनन्दित होते थे कि वे उसके नाम के कारण दुख उठाने के योग्य गिने गए; और वे यीशु के मसीह होने का प्रचार करते रहे (प्रेरितों 5:41, 42)। उनके दृढ़तापूर्वक प्रचार के असर से चेलों की गिनती कई गुणा बढ़ गई थी (प्रेरितों 6:7)।

कलीसिया के विरुद्ध सताव बढ़ता रहा जिससे स्तिफनुस पर पथराव के बाद, बहुत से चेलों को अपने काम और घर छोड़कर यरूशलेम से भागना पड़ा था। परन्तु, जो भाग गए थे, वे जहां भी गए मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते रहे (प्रेरितों 8:1-4)। कई तो सामरिया नगर तक चले गए और कलीसिया ने उनकी सहायता के लिए पतरस और यूहन्ना को भेजा (प्रेरितों 8:5-24)। सामरिया से लौटते हुए पतरस और यूहन्ना ने और बहुत से नगरों में प्रचार किया (प्रेरितों 8:25)।

उसी सताव के कारण काफ़ी मसीही सूरिया के अन्ताकिया में भी चले गए; और यरूशलेम की कलीसिया ने उनकी सहायता के लिए शिक्षक भेजे (प्रेरितों 11:19-26)। प्रेरितों 2 में दर्ज पिन्तेकुस्त के दिन को बीते कई वर्ष हो चुके थे, परन्तु लूका लगातार सुसमाचार के सिखाने की बात लिखता है। जल्दी ही अन्ताकिया की कलीसिया ने बरनबास और शाऊल को उनकी तीन में से पहली मिशनरी यात्रा के लिए भेजा (प्रेरितों 13:1-3)। इन यात्राओं में होने वाली बातें प्रेरितों के काम के बाद के अधिकतर भाग में मिलती हैं।

बाद के वर्षों में दूसरी कलीसियाएं भी यरूशलेम और अन्ताकिया की तरह ही सशक्त थीं। थिस्सलुनीके की कलीसिया ने लोगों को वचन में पक्का किया (1 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8) और इफिसुस की कलीसिया ने सारे एशिया माइनर में वचन को फैलाने में सहायता की (प्रेरितों 19:10)।

यीशु ने प्रेरितों को सुसमाचार प्रचार करने का आदेश दिया था, और प्रेरितों के काम से पता चलता है कि उन्होंने इस कार्य को कैसे पूरा किया। पौलुस की शिक्षा कि कलीसिया "[मसीह की] परिपूर्णता है" (इफिसियों 1:22, 23) से यह समझ में आता है कि कलीसिया को वही करना चाहिए जो यदि यीशु पृथ्वी पर रहता तो करता! आरम्भिक मण्डलियों ने ऐसा ही किया, और यीशु अपनी कलीसिया से प्रत्येक पीढ़ी में सुसमाचार के उसी जोश के साथ प्रचार की अपेक्षा करता है।

कलीसियाओं ने संतों को उपदेश दिए

यरूशलेम की कलीसिया गिनती और आत्मिक विकास और उत्साह में बढ़ी। इसके सदस्य सही ढंग से आराधना और वचन का अध्ययन करने में लगे रहे (प्रेरितों 2:42)।

वे ''एक चित्त और एक मन'' (प्रेरितों 4:32) हो गए और परमेश्वर की इच्छा के प्रति उनके मन में सम्मान बढ़ा (प्रेरितों 5:11)। उन्होंने अपने जीवनों में परमेश्वर के वचन के प्रभाव को बढ़ने दिया (प्रेरितों 6:7)।

विश्वासी लोगों ने हत्यारे यहूदियों की भीड़ के सामने स्तिफनुस की लाश को दफ़नाने का साहस किया (प्रेरितों 8:2)। यहां तक कि डरकर भागने वाले भी जीवन भर अपने विश्वास से नहीं डगमगाए (प्रेरितों 8:4)। शाऊल जो मसीहियों को बहुत सताता था, उसके मन परिवर्तन के बाद कलीसिया कुछ समय शान्ति से चलती और बढ़ती रही (प्रेरितों 9:31)। पहली बार अन्यजातियों (कुरनेलियुस तथा उसका परिवार; प्रेरितों 10) में पतरस के प्रचार करने से आरम्भिक मसीहियों को जातीय भिन्नताओं के बारे में सुसमाचार की सच्चाइयों का पता चल गया। इस परिवर्तन को स्वीकार करना यहूदी मसीहियों के लिए कठिन था, परन्तु वे समझ गए कि सुसमाचार किसी जातीय रुकावट को आड़े नहीं आने देता (प्रेरितों 11:1-18)।

और सताव के कारण यूहन्ना के भाई याकूब की मृत्यु हो गई, परन्तु कलीसियाएं प्रार्थना करती और प्रभु के वचन में बढ़ती रहीं (प्रेरितों 12:12, 24)। बाद में, उन्हें खतने की रीति के बारे में नये तथ्यों का पता चला और उन्होंने यह नया ज्ञान दूसरी मण्डलियों में भी पहुंचा दिया (प्रेरितों 15:22-29)।

इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे की कलीसियाओं में आत्मिक विकास के साथ पुष्टि, ताड़ना, प्रार्थना और उपवास होता था (प्रेरितों 14:21, 22) अध्ययन और शिक्षा सम्बन्धी अन्य रीतियों के विषय में प्रश्न पूछ-पूछ कर सूरिया के अन्ताकिया की कलीसिया मजबूत हो गई थी (प्रेरितों 15:1, 2, 33-35)। त्रोआस की मण्डली भी वचन का अध्ययन करने के बारे में गंभीर थी; यहां के सदस्य सप्ताह के पहले दिन आराधना के लिए इकट्ठा होने में बड़े सचेत थे (प्रेरितों 20:7)।

यह निरन्तर विकास, अध्ययन, आराधना और प्रचार प्रभु को प्रसन्न करने के लिए अविरोधी सुधार का कारण बना। यीशु ने अपनी कलीसिया की रूपरेखा में प्रेरित, भविष्यवक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर्ज़ और शिक्षक उपलब्ध करवा दिए थे (इफिसियों 4:11-16)। इससे न केवल मसीही लोगों की उस पहली पीढ़ी की देखभाल हुई, बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों के सुधार के लिए अति पवित्र विश्वास में प्रबन्ध हो गया था।

कलीसियाओं ने ज़रूरतमंदों की सहायता की

सुसमाचार प्रचार और सुधार के अलावा आरम्भिक मण्डलियां ज़रूरतमंदों की सहायता भी करती थीं। यह सहायता प्रेरितों की शिक्षा के प्रत्यक्ष प्रत्युत्तर में थी (प्रेरितों 11:28-30; 1 कुरिन्थियों 16:1-4) और यह सभी पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण का काम करती है। यरूशलेम के मसीही आवश्यकता के विशेष समय पर सक्रिय थे,[2] और

थोड़ी देर के बाद इन्हें भी अन्ताकिया के साथी मसीहियों से सहायता की आवश्यकता पड़नी थी (प्रेरितों 11:28-30)।

बाद में आने वाले एक अकाल में यहूदिया के सारे इलाके को सहायता की ज़रूरत पड़ी; और मकिदुनिया की मण्डलियों ने इतनी उदारता और बलिदानपूर्वक सहायता की कि पौलुस ने कहा कि उन्होंने ''अपनी सामर्थ से भी बाहर मन से दिया'' था (2 कुरिन्थियों 8:1-5)। अकाल पीड़ितों के लिए राहत के इस उदाहरण में अखया की दूसरी मण्डली भी शामिल थी (रोमियों 15:26; 2 कुरिन्थियों 9:2)। यूनान में कुरिन्थुस की मण्डली को पिछले वर्ष की गई ''उदारता से दान'' देने की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए पौलुस की अत्यावश्यक ताड़ना मिली थी (1 कुरिन्थियों 16:1-4; 2 कुरिन्थियों 8; 9)।

मसीही लोगों को मण्डलियों के रूप में दान देने के लिए सिखाया गया था, परन्तु उनसे निजी तौर पर उदारता से दान देने का भी आग्रह किया गया था (गलतियों 6:10; इफिसियों 4:28; याकूब 2:15, 16; 1 यूहन्ना 3:17)। यीशु ने स्वयं सिखाया था, ''कि लेने से देना धन्य है।'' यीशु की यह बात यदि प्रेरितों के काम में न होती, तो हमें पता न चलती (प्रेरितों 20:35)। किसी जरूरतमंद की सहायता करना एक आदर्श मसीही और प्रभु की कलीसिया की आदर्श मण्डली होने का एक भाग है।

सारांश

मसीही लोग विश्वास से चलने वाले लोग हैं (2 कुरिन्थियों 5:7); अर्थात, मसीही लोग प्रभु में भरोसा रखकर चलते हैं और जो कुछ करने के लिए उसका वचन उन्हें अगुआई देता है, वे वही करते हैं (रोमियों 10:17)। प्रभु के सच्चे चेले अपने अधिकार अर्थात आगे बढ़ने के आदेशों के लिए उसके वचन की ओर देखते हैं। यदि कोई व्यक्ति उन निर्देशों की पालना कर रहा है जो प्रभु और उसके प्रेरितों के नये नियम की शिक्षाओं में नहीं मिलते, तो वह उस भरोसे पर चलने या विश्वास से चलने का दावा नहीं कर सकता। साम्प्रदायिक कलीसियाओं की ऐसी रीतियां हैं जो देखने पर तो अच्छी लग सकती हैं और सांसारिक दृष्टिकोण से उनसे कुछ भलाई भी हो सकती है; परन्तु यदि ये कार्य और गतिविधियां प्रभु के निर्देशों में नहीं हैं, तो वे मसीह में विश्वास की उपज नहीं हैं। वे चाहे मनुष्यों के उत्कृष्ट मनों की उपज क्यों न हों परन्तु उन्हें मनुष्य ने ही आरम्भ किया है परमेश्वर ने नहीं।

परमेश्वर का वचन अपने लोगों को काम करने के केवल तीन क्षेत्रों का अधिकार देता है अर्थात सुसमाचार प्रचार, सुधार और परोपकार। पवित्र शास्त्र कलीसिया के किसी अन्य काम के बारे में चुप है। काम के ये तीन क्षेत्र प्रेरितों के काम में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

निजी तौर पर हर किसी के लिए इस जीवन में काम करके कमाना आवश्यक है (इफिसियों 4:28; 2 थिस्सलुनीकियों 3:12)। उन्हें अपने लाभ के लिए किसी भी प्रकार का काम करने की स्वतन्त्रता है। परन्तु, कलीसिया को कभी भी लाभ कमाने वाले व्यवसाय

के रूप में नहीं दिखाया गया। आरम्भिक कलीसिया अपने सदस्यों द्वारा उदारता से दिए गए दान से प्रभु के कार्य की अर्थिक ज़रूरतों को पूरा करती थी। जिन कलीसियाओं के अपने बैंक, बड़े-बड़े घर, व्यापारिक गोदाम या और किसी प्रकार के व्यवसाय हैं, वे ऐसा मसीह के अधिकार के बिना करती हैं।

सुसमाचार प्रचार, सुधार और परोपकार के काम को छोड़कर किसी भी अन्य प्रकार के काम में कलीसिया के शामिल होने के बारे में बाइबल चुप है। अन्य किसी भी प्रकार की गतिविधियां बाइबल के अधिकार से बाहर हैं।

प्रभु के मुख से निकले वचन और उसके प्रेरितों के लिखे हुए वचन के साथ ''प्रभु के अनकहे वचन'' (प्रभु की चुप्पी) का आदर कलीसियाओं को ठीक उसी प्रकार के कामों में शामिल होने के लिए विवश करेगा जिसका प्रेरितों के काम की पुस्तक में उल्लेख मिलता है। प्रेरितों से जुदा होते समय प्रभु द्वारा उन्हें दी गई आज्ञा कि ''उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है'' सिखाने के लिए कलीसिया को ऐसा ही करना पड़ेगा (मत्ती 28:20)।

पाद टिप्पणियां

[1]रोमी कानून के अनुसार इस प्रकार की पिटाई वैध नहीं थी, क्योंकि जिनको पीटा गया था उन पर न तो कोई मुकदमा चला था और न ही वे किसी अपराध के लिए दोषी ठहराए गए थे। [2]पृष्ठ 110 पर ''प्रेम भरा परोपकार'' देखिए।